श्री भागवत भजन

आनन्दधाम आश्रम, तपोवन, लक्ष्मण झूला, ऋषिकेश

प्रस्तावना

भजन बिना भक्त अधूरा !
भजन बिना नर फीका रे !

सद्गुरुदेव के प्रत्येक भाव में भजन छिपा हुआ है ।
सद्गुरु द्वारा गाए भजन संजीवनी के समान हैं ।
जो साधन पथ की सीढ़ी बनकर हम भक्तों को आगे ले जाते हैं ।
इन भजनों को गाकर मन के भीतरी तार भक्ति से ओत प्रोत हो जाते हैं ।
मन सहज ही प्रभु से जुड़ जाता है । सहज निर्मल वैराग्य उत्पन्न हो जाता है ।

जैसे माँ मीरा ने पदों का गायन कर भगवान श्री कृष्ण की अद्भुत भक्ति में रमकर उन्हें प्राप्त कर लिया ।उनमें लीन हो गईं ।जैसे संत शिरोमणी कबीरदास जी ने दोहों को गाकर अद्भुत स्थिति को प्राप्त किया ।इसी प्रकार अपने सद्गुरु की भाव वाणी में गाए भजनों को गाकर हम भी अपने सद्गुरु के उन्हीं भावों को प्राप्त करें ।अपने सद्गुरु के चरणों की प्रीति प्राप्त करें ।

आएँ मधुर भजनों को गाकर, गुनगुनाकर भजन सफल करें ।

इन्हीं भावों के साथ इस भजन संग्रह को
सद्गुरुदेव के चरणों में समर्पित करती हूँ ।

सौजन्य :- श्रीमती कुसुम बाई संथालिया (कोलकाता)

आनंदधाम आश्रम

श्री श्री १००८ श्री स्वामी आत्मप्रकाशजी महाराज

विषय सूचि

क्र.	भजन	पृ. सं.
1.	मंगलाचरण	1
2.	चरण कमल बंदौ हरि राई	2
3.	श्री कृष्ण गोविंद	3
4.	नटवर नागर नंदा	4
5.	मिलता है सच्चा	5
6.	पितु मातु सहायक स्वामी	6
7.	गुरुवर तुम ही बता दो	7
8.	ये मेरा जीवन	8
9.	सबसे ऊँची प्रेम सगाई	9
10.	जीवन की प्रभु सांझ	10
11.	आयो जी आयो	11
12.	कैलाश के निवासी	12
13.	प्रभु के घर जाना रे	13
14.	बोल हरि, बोल हरि, हरि हरि बोल	14
15.	मैं कहता डंके की चोट पर	15
16.	श्रद्धा रखो जगत के लोगों	16
17.	जै जै नारायण नारायण हरि हरि	17
18.	ब्रज के नंदलाला	18
19.	हे गोविंद राखो शरण	19
20.	हे प्रभु मुझे बता दो	20
21.	राम का गुणगान करिये	21
22.	श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन	22

विषय सूचि

क्र.	भजन	पृ. सं.
23.	वंदना करुँ ना करुँ	23
24.	नंद जी के आँगन में	24
25.	चलो देख आवें नंद घर लाला हुआ	25
26.	नंद के आनंद भयो	26
27.	कृष्ण जनम सुनी आई	27
28.	नाचे नंदलाल	28
29.	श्री वृंदावन धाम अपार	29
30.	पत्ते पत्ते में है झांकी	30
31.	तांडव गति मुंडन पर	31
32.	जीमो जीमो जी	32
33.	गोपी गीत	33
34.	गोकुल में देखो वृंदावन में देखो	34
35.	आज बिरज में होरी रे रसिया	35
36.	ब्रज के विरही लोग विचारे	36
37.	चले गए दिल के दामनगीर	37
38.	आओ मेरी सखियों	38
39.	पहरेदार द्वार प्रभु के पास सुदामाजी	39
40.	दु:ख हरो द्वारिकानाथ	40
41.	श्री भागवत जी की आरती	41
42.	श्री गुरुदेव की आरती	42
43.	समर्पण का दोहा	43
44.	आश्रम का पता	44

आनंदधाम आश्रम

सद्गुरुदेव स्वामी
श्री अमृत प्रकाशजी महाराज द्वारा
श्री भागवत कथा में गाए हुए भजन

मंगलाचरण

जय जय जय गुरुदेव दयानिधि । सरन तुम्हारिहिं होउँ सकल विधि ।।

जुग जुग सों तव चरननि चेरो । भयो सरन गुन गावत तेरो ।।

जय जय जय प्रभु सद्गुरु मेरो । थोरी दृष्टि मोहि दिसि फेरो ।।

तव पद पंकज जग जिन्ह धारहिं । बिनु कारन भवसिंधु उबारहिं ।।

जय तव नयन नलिन जन हेरी । तिहिं छन तेहि अघ देत निबेरी ।।

जय कर कमल पकरि सरनागत । उर लावतहि ताप त्रय भागत ।।

जय उर सरसिज आसन धारहिं । होइ आतमा मोहिं पुकारहिं ।।

जय गुरुदेव सदासिव रुपहिं । कृपा करन हित सब उर छूपहिं ।।

आदिदेव गणपति पद बंदउँ । इनकी सरन आइ आनंदऊँ ।।

जिन्ह बिनु जग्य पुरै कोउ नाहीं । सुर नर मुनि बंदत पद जाहीं ।।

विघ्न हरन सु सरन सुखदाता । जिन्ह बिनु सृष्टि न रचत विधाता ।।

आदिसक्ति बंदौं श्रीराधा । जासु सरन नासइ भव बाधा ।।

जाहि बिना ब्रह्महु सच आधा । अरु तेहि जीवन बाधा बाधा ।।

चरण कमल बंदौ हरि राई

चरण कमल बंदौं हरि राई,
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघे,
अंधे को सब कछु दरसाई,
चरण कमल बंदौं हरि राई ।

बहिरौं सुनें मूक पुनि बोले,
रंक चले सिर छत्र धराई,
चरण कमल बंदौं हरि राई ।

सूरदास स्वामी करुणामय,
बार बार बंदौं तेहि पाई ।
चरण कमल बंदौं हरि राई ।

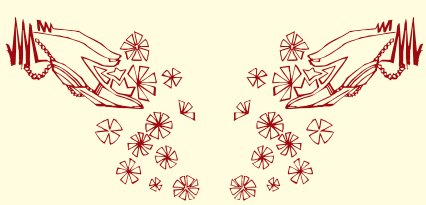

श्री कृष्ण गोविंद

ओम करारविंदेन पदारविंदं मुखारविंदे विनिवेशयंतम् ।
वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं बालं मुकुंदं मनसा स्मारामि ।।

श्री कृष्ण गोविंद हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेव ।
जिव्हे पिवस्वामृतमेतदेव गोविंद दामोदर माधवेति ।।

विक्रेतु कामाखिलगोपकन्या मुरारीपादार्पितचित्तवृत्तिः ।
दध्यादिकं मोहवशादवोचद् गोविंद दामोदर माधवेति ।।

गृहे गृहे गोपवधू कदम्बाः सर्वे मिलित्वा समवाप्य योगम् ।
पुण्यानि नामामि पठन्ति नित्यं गोविंद दामोदर माधवेति ।।

सुखं शयांन निलये निजेऽपि नामानि विष्णोः प्रवदन्ति मर्त्याः ।
ते निश्चितं तन्मयतां व्रजन्ति गोविंद दामोदर माधवेति ।।

जिव्हे सदैव भज सुंदराणि नामानि कृष्णस्य मनोहराणि ।
समस्त भक्तार्ति विनाशनानी गोविंद दामोदर माधवेति ।।

श्री कृष्ण राधावर गोकुलेश गोपाल गोवर्धन नाथ विष्णो ।
जिव्हे पिवस्वामृतमेतदेव गोविंद दामोदर माधवेति ।।

नटवर नागर नंदा

नटवर नागर नंदा, भजो रे मन गोविंदा ।
श्याम सुंदर मुख चंदा, भजो रे मन गोविंदा ।।

तू ही नटवर, तू ही नागर, तू ही बाल मुकुंदा ।
सब देवन में कृष्ण बड़े हैं, ज्यों तारा बिच चंदा ।।

सब सखियन में राधा जी बड़ी है, ज्यूँ नदियाँ बिच गंगा ।
ध्रुव तारे प्रहलाद उबारे, नरसिंह रुप धरन्ता ।।

कालीदह में नाग ज्यों नाथो, फण-फण निरत करंता ।
वृंदावन में रास रचायो, नाचत बाल मुकुंदा ।।

मीरा के प्रभु गिरधर नागर, काटो जम का फंदा ।।

मिलता है सच्चा

मिलता है सच्चा सुख केवल, भगवान तुम्हारे चरणों में ।
विनती है पल पल क्षण क्षण, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।

चाहे कष्टों ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों ओर अंधेरा हो ।
पर विचलित मन नहीं मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।

चाहे बैरी सब संसार बने, चाहे मौत गले का हार बने ।
जीवन मुझ पर भार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।

चाहे अग्नि में मुझे जलना हो, चाहे कांटो पर मुझे चलना हो ।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।

हृदय में तेरा भान रहे, हाथों में सुन्दर काम रहे ।
तन धन का नहीं अभिमान रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।

पितु मातु सहायक स्वामी

पितु मातु सहायक स्वामी सखा,
तुम्ही एक नाथ हमारे हो,
जिनके कुछ और आधार नहीं,
तिनके तुम ही रखवारे हो ।
प्रतिपाल करो सगरे जग को,
अतिशय करुणा उर धारे हो ।।

भूलें है हम ही तुमको तुम तो,
हमरी सुधि नाहि बिसारे हो ।
शुभ शान्ति निकेतन प्रेम निधे,
मन मन्दिर के उजियारे हो ।।

उपकारन को कछु अंत नहीं,
छिन ही छिन जो विस्तारे हो ।
महाराज महा महिमा तुमरी,
समझे विरले बुधिवारे हो ।।

इस जीवन के तुम जीवन हो,
इन प्राणन के तुम प्यारे हो ।
तुमसे प्रभु पाय प्रताप हरि,
केहि के अब और सहारे हो ।।

गुरूवर तुम ही बता दो

गुरुवर तुम ही बता दो, किस की शरण में जाऊँ ।
किसकी शरण में गिरकर, अपनी व्यथा सुनाऊँ ।।

अज्ञान के तिमिर ने, चारों तरफ से घेरा ।
क्या रात है प्रलय की, (होगा नहीं सवेरा)- २ ।
पथ और प्रकाश दो तो, चलने की शक्ति पाऊँ ।।

दुष्वृत्तियों ने मुझको, घेरा कदम-कदम पर ।
कभी काम-क्रोध बनकर, (कभी लोभ मोह बनकर) -२।
इन दानवों से कैसे, अपना गला छुड़ाऊँ ।।

जीवन के देवता का, करता रहा निरादर ।
कैसे करूँ समर्पित, (जीवन की जीर्ण चादर) - २ ।
ये पाप की गठरियाँ, क्या खोलकर दिखाऊँ ।।

माना कि मैं पतित हूँ, क्या रुष्ठ रह सकोगे ।
मुस्कान प्रेम अमृत (क्या दे नहीं सकोगे) - २ ।
दाता तुम्हारे दर से, जाऊं तो किधर जाऊं ।।

ये मेरा जीवन

ये मेरा जीवन तेरे हवाले,
प्रभु इसे पग - पग तू ही संभाले ।

भव सागर में घिर गई नैया,
डोल रही है ओ रे खेवैया ।
अब आकर तू ही बचा ले,
प्रभु इसे पग - पग तू ही संभाले ।।

मोह माया के बंधन खोलो,
अब तो प्रभु मोहे शरण में ले लो ।
इस पापी को अपना ले,
प्रभु इसे पग - पग तू ही संभाले ।

ये जीवन है तुझसे पाया,
सब तेरे हैं कोई ना पराया ।
सुन धनुष ओ बाँसुरी वाले,
प्रभु इसे पग - पग तू ही संभाले ।

सबसे ऊँची प्रेम सगाई

सबसे ऊँची प्रेम सगाई ।

दुर्योधन के मेवा त्यागे,
साग विदुर घर खाई ।।....

जूठे फल सबरी के खाये,
बहू विधि करत बड़ाई ।।....

प्रेम के वश में अर्जुन रथ हाक्यो,
भूल गये ठकुराई ।।....

ऐसी प्रीत बढ़ी वृन्दावन,
गोपियन नाच नचाई ।।....

राज सूयज्ञ युधिष्ठिर किन्हों,
तामे जूठ उठाई ।। ....

सूर क्रूर इस लायक नाहीं,
कह लगि कहे बड़ाई ।।....

जीवन की प्रभु सांझ

जीवन की प्रभु सांझ भई है,
अब तो शरण में ले लो ।
जगत के स्वामी, मेरे प्रभु वर,
अपने चरण में ले लो ।।

इस देही के मालिक तुम हो,
तुम्हें सदा भुलाया ।
भरी जवानी मोल न जाना,
सदा तुझे बिसराया ।।

तेरे चरण ही मानसरोवर,
अपने तरण में ले लो ।

छोड़ के कंचन पाकर पीतल,
अंग उसे ही लगाया ।
मृगतृष्णा की प्यास में भटका,
मेरा मन भरमाया ।।

दास नारायण भिक्षा मांगे,
अपनी धरण में ले लो ।

आयो जी आयो

आयो जी आयो,
आयो शरण जगदीश ।

राखो न राखो, तेरे मन की,
बीते युग दस बीस ।
आन दुआरे न जाऊँ कबहूँ,
मौन रहो करो खीश ।।

जोग जुगुति तप, तेरे अर्पण,
चाहे करूँ जिसतीस ।
चारी पदारथ मोहे न भावे,
भले लगे तुम ईश ।।

साधक सिद्ध संत की पदवी,
नहीं चाहूँ करूँ हींस ।
ब्रह्मादिक पद कबहुँ ना चाहूँ,
महाराज पद शीश ।।

कैलाश के निवासी

कैलाश के निवासी, नमो बार-बार हूँ,
आयो शरण तिहारी, प्रभु तार-तार तू ।।

भक्तों को कभी तुमने शिव निराश न किया ।
मांगा जिन्हें जो चाहा वरदान दे दिया ।।
बड़ा है तेरा दायजा - २, बड़ा दातार तू ।।।

बखान क्या करुं मैं राखों के ढेर का ।
चपटी भभूत में है खजाना कुबेर का ।।
हे गंग धार मुक्ति द्वार -२, ओमकार तू ।।।

क्या क्या नहीं दिया हम क्या प्रमाण दे ।
बस गए त्रिलोक शंभु तेरे दान से ।।
जहर पिया जीवन दिया -२, कितना उदार तू ।।।

तेरी कृपा बिना नहीं हिले एक ही अणु ।
लेते हैं श्वास तेरी दया से तनु तनु ।।
कहे दास एक बार - २, मुझको निहार तू ।।।

प्रभु के घर जाना रे

प्रभु के घर जाना रे, मोहें जाना ।

एक ओर प्रभु की दया की नगरी,
एक ओर क्रूर जमाना ।।
एक ओर सांई की मधुर छटा है,
दूसरी ओर मनमाना ।।

बड़े बड़े पापिन्ह को वे तारे,
दया की अद्भुत खजाना ।।
बहुत गयी अब थोड़ी रही है,
फिर भी नहीं सरमाना ।।

सुनो रे जग के मूरख प्राणी,
अब नहीं देर लगाना ।।
कोमल चित्त महाराज प्रभु के,
देखत मोर मन माना ।।

बोल हरि, बोल हरि, हरि हरि बोल

बोल हरि, बोल हरि, हरि हरि बोल ।
केशव माधव गोविन्द बोल ।।

नाम प्रभु का है सुखकारी,
पाप कटेगें क्षण में भारी ।
नाम का पीले अमृत घोल,
केशव माधव गोविन्द बोल ।।

शबरी अहिल्या सदन कसाई,
नाम जपन से मुक्ति पाई ।
नाम की महिमा है बेमोल,
केशव माधव गोविन्द बोल ।।

सुवा पढ़ावत गणिका तारी,
बड़े बड़े निशिचर संहारी ।
गिन गिन पापी तारे तोल,
केशव माधव गोविन्द बोल ।।

जो जो शरण पड़े प्रभु तारे,
भवसागर से पार उतारे ।
बंदे तेरा क्या लागे मोल,
केशव माधव गोविन्द बोल ।।

मैं कहता डंके की चोट पर

मैं कहता डंके की चोट पर,
ध्यान से सुनियो लाला ।
अपना हरि है हजार हाथ वाला,
वो दीन दयाला ।।
अपना हरि है हजार हाथ वाला....

क्या कहना समरथ स्वामी का - २,
क्या से क्या कर डाला ।
अपना हरि है हजार हाथ वाला,
वो दीन दयाला ।।
अपना हरि है हजार हाथ वाला....

कौन बटोरे कंकड़ पत्थर,
जब हो हाथ में हीरा ।
कंचन सदा रहेगा कंचन,
और कठीर कठीरा ।।
साँच के आगे झूठ का निकला,
हरदम यहाँ दिवाला ....

कोई झुका नहीं सकता जग में,
अपने प्रभु का झंडा ।
जो उसको छोड़ेगा उसके,
सिर पर पड़ेगा डंडा ।
युगों युगों से इस धरती पर,
उसी का है बोल बाला ....

वो दीनदयाला है रखवाला - २
क्या मारेगा मारनेवाला ।।

श्रद्धा रखो जगत के लोगों

दोहा - श्रद्धा रखो जगत के लोगों,
अपने दीनानाथ पे ।
लाभ हानि जीवन और मृत्यु,
सब कुछ उसके हाथ में ।।

मारने वाला है भगवान,
बचाने वाला है भगवान ।
बाल ना बाँका होता उसका,
जिसका रक्षक दया निधान ।।

त्याग दो रे भाई फल की आशा,
स्वार्थ बिना प्रीत जोड़ो ।
कल क्या होगा इसकी चिन्ता,
जगत पिता पर छोड़ो ।।
क्या होनी है, क्या अनहोनी - २
सबका उसको ज्ञान ।।

जल थल अग्नि आकाश पवन पर,
केवल उसकी सत्ता ।
प्रभु इच्छा के बिना यहाँ पर,
हिल ना सके एक पत्ता ।।
उसी का सोचा यहाँ पर होता,
उसकी शक्ति महान ।।

जै जै नारायण नारायण हरि हरि

जै नारायण, स्वामी नारायण, जै नारायण ।

जै जै नारायण नारायण हरि हरि,
स्वामी नारायण नारायण हरि हरि ।
तेरी लीला सबसे न्यारी न्यारी ।। हरि हरि
तेरी महिमा - २ प्रभु है प्यारी प्यारी ।।। हरि हरि ....

अलख निरंजन भव भय भंजन,
जन मन रंजन दाता । - २
हमें शरण दे अपने चरण में,
कर निर्भय जग त्राता ।।
तूने लाखों की नैया तारी तारी ।।। ....

प्रभु के नाम का पारस जो छू ले,
वो हो जाए सोना । - २
दो अक्षर का शब्द हरि है,
लेकिन बड़ा सलोना ।।
उसने संकट टाले भारी भारी ।।। ....

ब्रज के नंदलाला

ब्रज के नंदलाला,
श्री राधा जू के साँवरिया ।
सब दुःख दूर हुए,
जब तेरा नाम लिया ।।

मीरा पुकारे तुम्हें,
गिरधर गोपाला ।
बन गया अमृतमय,
(विष का भरा प्याला) - २ ।।
कौन मिटाये उसे,
जिसे तूने राख लिया ।।

जब तेरे गोकुल में,
आई विपदा भारी ।
एक इशारे पे,
(सारी विपदा टारी) - २ ।।
उठ गया गोवर्धन,
जिसे तू ने उठा लिया ।।

नैनो में श्याम बसे,
मन में बनवारी ।
सुध बिसराय गयी,
(मुरली की धुन प्यारी) - २ ।।
मेरे मन मंदिर में,
रास रचाओ रसिया ।।

हे गोविंद राखो शरण

हे गोविंद राखो शरण अब तो जीवन हारे ।

हे गोविन्द ! हे गोपाल ! हे गोविंद ! हे गोपाल !

नीर पीवन हेतु गयो सिंधु के किनारे ।

सिंधु बीच बसत ग्राह चरण धर पछारे ।।

चार प्रहर युद्ध भयो ले गयो मझधारे ।

नाक कान डूबन लागे, कृष्ण को पुकारे ।।

द्वारका से शब्द सुनि, गरुड़ चढ़ि पधारे ।

ग्राह को हरि मारी के, गजराज को उबारे ।।

सूर कहे श्याम सुनो, शरण हे तिहारे ।

अबकी बार पार करो, नंद के दुलारे ।।

हे प्रभु मुझे बता दो

हे प्रभु मुझे बता दो,
चरणों में कैसे आऊँ ।
माया के बंधनों से,
अब मुक्ति कैसे पाऊँ ।।

ना जानू मैं कोई पूजन,
अज्ञानी हूँ मैं भगवन ।
करना कृपा दयालु,
बंधन से छूट जाऊँ ।।

मैं हूँ पतित स्वामी,
तुम हो पतित पावन ।
अवगुण भरा हृदय,
इसे कैसे मैं दिखाऊँ ।।

अच्छा हूँ या बुरा हूँ,
जैसा भी हूँ तुम्हारा ।
ठुकराओ ना मुझे,
चरणों में सिर झुकाऊँ ।।

राम का गुणगान करिये

राम का गुणगान करिये,

राम प्रभु की भद्रता, सभ्यता का ध्यान धरिये ।

राम के गुण गुण निरंतर,

राम गुण सुमिरन रतन धन ।

मनुजता को कर विभूषित,

मनुज को धनवान करिये ।।

सगुण ब्रह्म स्वरुप सुन्दर,

सुजन रंजन भूप सुखकर ।

राम आत्मा, राम आत्मा,

राम का सन्मान करिये ।।

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरणभवभय दारुणम् ।
नव कंज लोचन, कंजमुख, कर-कंज, पदकंजारुणम् ।।१ ।।

कन्दर्प अगणित अमित छबि, नव नील नीरद सुंदरम् ।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि, नौमि जनक सुतावरम् ।।२ ।।

भजु दीनबन्धु दिनेश दानव - दैत्यवंश - निकंदनम् ।
रघुनंद आनन्द कंद - कौशल चन्द दशरथ - नन्दनम् ।।3 ।।

सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु, उदार - अंग विभूषणम् ।
आजानु भुज शर चाप धर, संग्राम जित खरदूषणम् ।।४ ।।

इति वदति तुलसीदास, शंकर - शेष - मुनि मन रंजनम् ।
मम हृदय कंज निवास कुरु, कामादि खल दल गंजनम् ।।५ ।।

मनु जाहिं राचेउ मिलहि सो बरु, सहज सुन्दर साँवरो ।
करुणा निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो ।।६ ।।

एहि भाँति गौरी असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषी अली ।
तुलसी भवानिही पुजी पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली ।।७ ।।

सोरठा - जानि गौरी अनुकुल सिय हिय हरषु न जाई कहि ।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लग ।।
सियावर रामचन्द्र की जय ।।

वंदना करूँ ना करूँ

वंदना करूँ ना करूँ,
स्वर गीला हो रहा ।
क्रंदना करूँ ना करूँ,
मन ढीला हो रहा ।। ....

प्रभु के चरण तो,
दिख ही रहे ।
प्राण सारी कहानी,
लिख ही रहे,
श्यन्दना धरूँ ना धरूँ
तन पीला हो रहा ।। ....

आधी उमर मेरी,
बीत ही गई ।
झोली भरी थी,
रित की गई ,
व्यंजना तरूँ ना तरूँ,
चक्र ढीला हो रहा ।। ....

नंद जी के आँगन में

नंद जी के आँगन में, बज रही आज बधाई ।
सौ - सौ बार बधाई ले लो, यहाँ लाखों बार बधाई ।।

चमत्कार ऐसा हो गया लोगों, हो गई बात निराली ।
रात - रात में नंद बाबा की, देखो दाढ़ी हो गई काली ।।

ना जाने किस ऋषि मुनी ने, धागा आज लपेटा ।
नंद भवन अनहोनी हो गई, यहाँ बेटी हो गई बेटा ।।

साठ साल के बूढ़े देखो, हो गए आज जवान ।
नाचे कूदे धूम मचावे, अरे गावे मीठी बान ।।

आज यशोदा सब गोपिन्ह को, नए नए वस्त्र लुटावे ।
गोपी ग्वाल सब हिल मिलकर के, बाबा को नाच नचावे ।।

युग युग जीवे लाला तुम्हारो, ये आशीष हमारी ।
ऐसे दे गई आशीष सब मिल, अरे गावे ब्रज बनवारी ।।

चलो देख आवें नंद घर लाला हुआ

चलो देख आवें नंद घर लाला हुआ ।
ब्रजराज के कुल का, उजाला हुआ ।।

सखी ब्रज के सब ग्वाल, होके दिल में खुशहाल ।
बैंया गरदन में डाल, नाचे लेके करताल ।।
आज नंद का, नसीबा उजाला हुआ ....

सखी हिलमिल के ग्वाल, करे जय - जय गोपाल ।
बाजे शंख ध्वनी आज, जन्म लिन्हों नन्दलाल ।।
झूले अंगना में पलना, जहाँ लाला हुआ ....

आज ब्रज में महाराज, करने भक्तों के काज ।
जुड़ा सारा समाज, करो दर्शन सब आज ।।
सुख नैनों को पहुँचाने, वाला हुआ ....

देखो गोकुल की ओर, सावन भादों का सौर ।
बोले पंछी बन मोर, मानो बदरी की भौर ।।
बूंदें आनन्द की, बरसाने वाला हुआ ....

नंद के आनंद भयो

नंद के आनंद भयो, जय कन्हैया लाल की ।

जय कन्हैया लाल की, मदन गोपाल की ।।

हाथी दीन्हें, घोड़ा दीन्हें, और दीन्हें पालकी ।

बालकन्ह को हाथी घोड़ा, बूढ़न्ह को पालकी ।।

रतन दीन्हें, हार दीन्हें, गैया ब्याई हालकी ।

कंठा और कंठूला दिन्हे, दीन्हीं मुक्ता माल की ।।

कड़े दीने, छड़े दीने, बिंदी दीनी भाल की ।

सुरमा दीने, दर्पन दिने, कंघी दीने बाल की ।।

कृष्ण जनम सुनी आई

कृष्ण जनम सुनी आई, जसोदा मैया दे दो बधाई ।
तेरो कान्हा जनम सुनी आई, जसोदा मैया दे दो बधाई ।।

टीका भी लूंगी मैं तो, झूमर भी लूंगी ।
और कुण्डल की - २, कर दो पोसाई ।।

हरवा भी लूंगी मैं तो, नकलस भी लूंगी ।
ओर लॉकेट की - २, कर दो पोसाई ।।

साड़ी भी लूंगी मैं तो, लहंगा भी लूंगी ।
मेरी चूनर की - २, कर दो पोसाई ।।

आयल भी लूंगी मैं तो, पायल भी लूंगी ।
और बिछुआ की - २, कर दो पोसाई ।।

चन्द्रसखी भज, बाल कृष्ण छबि ।
मैं तो जी भर के, लूंगी बधाई ।।

नाचे नंदलाल

नाचे नंदलाल, नचावे हरि की मैया ।।

मथुरा में हरि जन्म लियो है, गोकुल में पग धरो री कन्हैया ।

रुनक - झुनक पग नूपुर बाजे, ठुमक ठुमक पग धरो री कन्हैया ।।

धोती न बाँधे जामो ना पहिरे, पीताम्बर को बड़ो री पहरैया ।

टोपो ना ओढ़े लाला फेटा ना बाँधे, मोर मुकुट को बड़ो री औढ़ैया ।।

शाला ना ओढ़े दुशाला ना ओढ़े, काली कमरिया को बड़ो री ओढ़ैया ।

दूध ना भावे याने दही ना भावे, माखन मिसरी को बड़ो री खवैया ।।

खेल ना खेले खिलौना ना खेले, बंसरी को लाला बड़ो री बजैया ।

चंद्रसखी भज बालकृष्ण छवि, हँस हँस कंठ लगावे हरि की मैया ।।

श्री वृंदावन धाम अपार

श्री वृंदावन धाम अपार, रटे जा राधे - राधे ।

भजे जा राधे राधे ! कहे जा राधे - राधे ।।....

वृंदावन गलियाँ डोले, श्री राधे - राधे बोले ।

वाको जनम सफल हो जाए, रटे जा राधे - राधे ।।....

या ब्रज की रज सुन्दर है, देवन को भी दुर्लभ है ।

मुक्ता रज शीष चढ़ाये, रटे जा राधे - राधे ।।....

जो राधे - राधे रटतो, दुःख जनम - जनम को कटतो ।

तेरो होतो बेड़ो पार, रटे जा राधे - राधे ।।....

जो राधा जनम ना होतो, रसराज बिचारो रोतो ।

होतो न कृष्ण अवतार, रटे जा राधे - राधे ।।....

पत्ते पत्ते में है झांकी

पत्ते पत्ते में है झांकी भगवान की ।
किसी सूझ वाली आँख ने पहचान ली ।।

नामदेव ने पकाई, रोटी कुत्ते ने उठायी ।
पीछे घी का कटोरा लिये जा रहे ।।
प्रभु रूखी ही ना खाओ, थोड़ा घी तो लेते जाओ ।
क्यों रूप तुम ये, मुझसे छुपा रहे ।।
तेरा मेरा एक नूर, फिर काहे को हुजूर ।
तूने शकल बनाई है श्वान की ।।
किसी सूझ वाली ....

सूझ मीरा की निराली ।
पी गई जहर की प्याली ।।
ऐसा गिरधर बसाया हर स्वास में ।
आया जब काला नाग, बोली धन्य मेरे भाग्य ।।
प्रभु आये काले नाग के लिबास में ।
सुनो - २ करतार, काले कृष्ण मुरार ।।
करुणा है करुणा निधान की ।
किसी सूझ वाली ....

उसी तरह सूरदास, निगाह जिनकी खास ।
गिरधर नाम बसाया, हर सांस में ।।
जब नल की हुई पुकार, आये स्वयं सरकार ।
यह महिमा है जगत पालनहार की ।।
किसी सूझ वाली ....

तांडव गति मुंडन पर

तांडव गति मुंडन पर निरखत बनवारी ।

पं पं पं पग पटकत फं फं फं फनन ऊपर ।

विं विं विं विनती करत नाग वधु आली ।। ....

सं सं सं सनकादिक नं नं नं नारदादि ।

गं गं गं गन्धर्वादिक, सबहि देत ताली ।। ....

विद्याधर प्रभु दयाल, तज विषाद कियो निहाल ।

काली तेरे धन्य भाग्य, विसरत न विसारे ।। ....

सूरदास प्रभु की वाणी, किं किं किनहूँ ना जानी ।

चं चं चं चरण धरत, अभय कियो काली ।। ....

जीमो जीमो जी

(गोवर्धन भोग का भजन)

जीमो जीमो जी गोवर्धन नाथ, करूँ मैं थांकी मिजबानी ।
ताजी है रसदार जलेबी, छल्लेदार इमरती ।।
पंचधारी के लड्डु प्रभुजी, और पिस्ते की चक्की ।
घेवर फेणी से (रसगुल्ले से) सजी है परात ।।
करूँ मैं थांकी मिजबानी ....

मावा, बाटी और खोपरा, पाक बना अलबेला ।
काजू किसमिस का श्री खण्ड है, और केरी का झोला ।।
चटनी पापड़ के साथ अचार, करूँ मैं थांकी मिजबानी ....

आलू गिल्की तोरई बैंगन मिर्ची और टमाटर ।
बना मुंग की दाल का हलवा, जिसमें डाली केशर ।।
नुक्ति चक्की की बीछी है बिछात, करूँ मैं थांकी मिजबानी ....

रबड़ी लच्छेदार कलाकन्द, मोहन भोग पधराऊँ ।
आवगो गोवर्धन प्रभुजी, कर मनुहार जिमाऊँ ।।
म्हारा हाथ सूँ पकायो, केसरिया भात, करूँ मैं थांकी मिजबानी ....

गोपी गीत

जयति तेऽधिकं जन्मना व्रजः,
श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि ।
दयित दृश्यंता दिशु तावका
स्त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्वते ।।

शरदुदाशये साधुजातसत् ।
सरसिजोदर श्रीमुषा दृशा ।।
सुरतनाथ तेऽशुल्कदासिका ।
वरद निघ्नतो नेह किं वधः ।।

विषजलाप्ययाद व्यालराक्षसाद ।
वर्षमारुपाद वैद्युतानलात् ।।
वृषमयात्मजाद् विश्वतोभया ।
दृषभ ते वयं रक्षिता मुहुः ।।

न खलु गोपिकानन्दनो भवा ।
नखिलदेहिनामन्तरात्मदृक् ।।
विखनसार्थितो विश्वगुप्तये ।
सख उदेयिवान् सात्वतां कुले ।।

विरचिताभयं वृष्णिधुर्य ते ।
चरणमीयुषां संसृतेर्भयात ।।
करसरोरुहं कान्त कामदं ।
शिरसि देहि नः श्री करग्रहम् ।।

गोकुल में देखो वृंदावन में देखो

गोकुल में देखो, वृंदावन में देखो रे
मुरली बाजे रे, श्याम संग राधा नाचे रे ।।- २

चंद्रकिरण सा श्याम सलोना, दोई आंखें कजरारी,
ठुमक ठुमक नाचे गोपियन के संग, जग का पालन हारी,
रास बिहारी संग राधा सुकुमारी, ब्रज में बिराजे रे ।।....

छम - छम नाचे राधा रानी, सुनकर मीठी मुरलिया,
श्याम छवि पर सब बलिहारी, ग्वाल बाल और गैया,
सरर सरर चाले रे, मस्त पुरवइया हो, मेघा गरजे रे ।।....

यमुना तट पर वंशीवट पर कान्हा रास रचाए,
गोपी बनकर शंकर आए, गोपेश्वर कहलाए,
डम डम डम डमरु बाजे, कान्हा की मुरली पर, सब जग नाचे रे ।।....

रास रच्यो, रास रच्यो, रास रच्यो है,
यमुना किनारे कान्हा रास रच्यो है ।
गोपिन्ह के संग कान्हा रास रच्यो है ।
राधा के संग श्याम रास रच्यो है ।

राधा नाचे, कृष्ण नाचे, नाचे सब गोपी जन ।
मन मेरा बन गयो, ए री सखी पावन वृंदावन ।।

आज बिरज में होरी रे रसिया

आज बिरज में, होरी रे रसिया,
होरी रे होरी रे, बरजोरी रे रसिया ।।....

कवन के हाथ, कनक पिचकारी,
कवन के हाथ, कमोरी रे रसिया ।।....

श्याम के हाथ, कनक पिचकारी ,
राधा के हाथ, कमोरी रे रसिया ।।....

राधे पै श्याम, बहुत रंग डारे,
श्याम पै राधे, गोरी रे रसिया ।।....

लाल गुलाल के, बादल छाये,
केशर कीच, मच्यो रे री रसिया ।।....

चंद्रसखी भज, बाल कृष्ण छवि,
चिरँजी रहो यह, जोरी रे रसिया ।।....

ब्रज के विरही लोग विचारे

ब्रज के विरही लोग विचारे ।

बिन गोपाल ठगे से ठाढ़े, अति दुरबल तन हारे ।।

मात जसोदा पंथ निहारत, निरखत सांझ सकारे ।

जो कोई कान्ह कान्ह कहि बोलत,

अँखियन बहत पनारे ।

यह मथुरा काजर की रेखा, जे निकसे ते कारे ।

परमानन्द स्वामी बिनु ऐसे,

ज्यों चन्दा बिनु तारे ।

चले गए दिल के दामनगीर

चले गए दिल के दामनगीर ।।

जब सुधि आवे प्यारे दरस की,
उठत कलेजे पीर ।
नटवर वेश नयन रतनारे,
सुन्दर श्याम शरीर ।।....

वृंदावन बंशीवट त्याग्यो,
त्याग्यो जमुना नीर ।
ब्रज गोपिन्ह को प्रेम बिसार्‌यो,
ऐसे भये बेपीर ।।....

आपन जाये द्वारिका छाये,
खारी नद के तीर ।
सूर श्याम ललिता उठ बोली,
आखिर जात अहीर ।।....

आओ मेरी सखियों

आओ मेरी सखियों, मुझे मेहंदी लगा दो ।
मेहंदी लगा दो, मुझे ऐसी सजा दो ।।
मुझे श्याम सुंदर की दुल्हन बना दो ।।।....

सत्संग में मेरी बात चलाई,
सद्गुरु ने मेरी कीन्ही रे सगाई ।
उनको बुला के हाथ लेवा तो करा दो ।।....

ऐसी पहनूँ चूड़ी जो कबहूँ न टूटे,
ऐसा वरु दूल्हा जो कबहूँ न छूटे ।
अटल सुहाग की बिंदिया लगा दो ।।....

भक्ति का सुरमा मैं आंखों में लगाऊँगी,
दुनिया से नाता तोड़ उनकी हो जाऊँगी ।
सद्गुरु को बुलाके फेरे तो पड़वादो ।।....

बाँध के घुंघरु मैं उनको रिझाऊँगी ,
लेके इकतारा मैं श्याम श्याम गाऊँगी ।
सद्गुरु को बुलाके डोली तो सजा दो ।।
सखियों को बुलाके विदा तो करा दो ।।।....

पहरेदार द्वार प्रभु के पास सुदामाजी का वर्णन

शीश पगा न झगा तन में,
प्रभु जान कोय आय बसे केही ग्रामा,
धोती फटी सी लटी दुपटी,
ओर पायन सो पान नहीं जामा,
द्वार खड़ो द्विज दुर्बल देख,
रहो चक सो वसुधा अभिरामा,
पूछत दीनदयाल को धाम,
बतावत आपनो नाम सुदामा ।।

(सुदामा जी की दशा देखकर भगवान श्री कृष्ण का शोक करना)

ऐसे बेहाल विवाईन्सो,
पग कंटक जाल लगे पुनि जोये,
हाय महादुःख पायो सखा,
तुम आये इते न किते दिन खोये,
देख सुदामा की दीन दशा,
करुणा करके करुणानिधि रोये,
पानी परात को हाथ छुओ नहीं,
नैनन्ह के जल सो पग धोये ।।

दुःख हरो द्वारिकानाथ

दुःख हरो द्वारिकानाथ शरण में तेरी ।

करुणाकर दीनदयाल विपत्ति हर मेरी ।।

सुना है प्रभु तुम दीनबंधु हो, सबका दुःख हर लेते ।

जो निराश है उसकी झोली, आशा से भर देते ।।

तुम कहाँ छिपे भगवान, करो मत देरी ।।।....

जो भी शरण तुम्हारे आता, उसका धैर्य बँधाते ।

नहीं डूबने देते दाता, नैया पार लगाते ।।

मैं कब से रहा पुकार, तेरे द्वार करो मत देरी ।।।....

अगर सुदामा होता मैं तो, दौड़ द्वारिका आता ।

पाँव आँसुओं से धो देता, मन की प्यास बुझाता ।।

प्रभु तुम ना बनो अनजान, मेरे भगवान, करो मत देरी ।।।....

श्री भागवत जी की आरती

आरती अतिपावन पुरान की,
धर्म भक्ति विज्ञान खान की ।।

महापुरान भागवत निर्मल,
शुक-मुख विगलित निगम कल्प फल ।
परमानन्द सुधा रसमय फल ।
लीला रति रस रस निधान की ।।....

कलि मल मथनि त्रिताप निवारिनि,
जन्म मृत्युमय भव भयहारिनि ।
सेवत सतत सकल सुखकारिनि ।
सुमहौषधि हरि चरित गान की ।।....

विषय विलास विमोह विनाशिनी,
विमल विराग विवेक विकाशिनी ।
भगवत्तत्व रहस्य प्रकाशिनि ।
परम ज्योति परमात्म ज्ञान की ।।....

परमहंस मुनि मन उल्लासिनी,
रसिक हृदय रस रास विलासिनि ।
भुक्ति मुक्ति रति प्रेम सुदासिनि ।
कथा अकिंचन प्रिय सुजान की ।।....

ॐ कर्पूरगौरं करुणावतारं, संसार सारं भुजगेन्द्रहारं ।
सदा वसंत हृदयारविन्दे, भवं भवानि सहितं नमामी ।।

श्री गुरूदेव की आरती

ॐ जय प्रभु अविनाशी, स्वामी जय प्रभु अविनाशी ।
आरती जन दुःख भंजन, घट घट के वासी ।।

सबके भीतर सबके प्रेरक, सबके प्रकाशी ।
सबको सब विधि देते, आनन्द की राशी ।।

जनम मरन से डरके, शरण में जो आसी ।
ज्ञान और ध्यान सिखाकर, काटो यम फाँसी ।।

मान बड़ाई तज जो चरणन चित्त लासी ।
पाप ताप और दुविधा, सब ही मिट जासी ।।

ज्ञान की ज्योति जगके भ्रम तम के नाशी ।
घट में सब दरसावो, मथुरा और काशी ।।

जनम - जनम से सोवत आयो, मोह नींद खासी ।
दीनानाथ जगाओ, तुमरो गुण गासी ।।

अपना रुप लखाओ दर्शन अभिलाषी ।
प्रेम भक्ति वर दीजो, मैं बलि - बलि जासी ।।

आज्ञा माने जो आपकी होकर विश्वासी ।
सुख शान्ति मन आवे, मुक्ति फल पासी ।।

समर्पण का दोहा

तुमरी चीज तुम्हारे आगे, भेंट करुँ ममदेव ।
दया करो, हे दयानिधी, सब देवन के देव ।।

प्रार्थना

हे परम पिता परमात्मा
सभी प्राणी हो सुखी,
सभी प्राणी हो निरोग ।
सभी सदाचारी बनें,
सभी प्राणी हो निःशोक ।।
दुर्गुणों का नाश हो प्रभु,
सद्गुणों का विकास हो प्रभु ।।
दुःख में धीरज रहे प्रभु,
सुख में उदार हो प्रभु ।।
प्राणी मात्र का कल्याण हो प्रभु,
तेरी हमेशा याद रहे प्रभु ।।
तेरी इच्छा पूर्ण हो प्रभु,
सर्वदा सर्व दशा में परिपूर्ण हो प्रभु ।
ॐ शन्तिः !! ॐ शन्तिः !! ॐ शन्तिः ।।

त्वमेव माता चपिता त्वमेव ।
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव ।
त्वमेव सर्व मम देव देव ।।

श्री स्वामी बलजीत आनंद धाम की शाखाएँ

सम्पर्क सूत्र : 95573 46475

श्री स्वामी बलजीत आनंद धाम
राधा कृष्ण मन्दिर
तपोवन झूला, टेहरी गढ़वाल
ऋषिकेश - 249192, उत्तराखंड

श्री स्वामी बलजीत परमार्थ भवन
सी. के. 8 / 10, गढ़वासी टोला
मणिकर्णिका कुण्ड
वाराणसी - 752001, उत्तरप्रदेश

स्वामी बलजीत सत्संग भवन
मु. पो. बिसाऊ,
जिला झुंझनु - 331027, राजस्थान

स्वामी आत्मप्रकाश रामायण भवन
श्री सिद्ध हनुमान मन्दिर, अग्रसेन भवन
अप्पर बाजार, गोविन्दपुर
धनबाद - 828109, झारखंड

महिला सत्संग भवन
शंकर चौक
सहरसा - 852201
बिहार

श्री आत्म प्रकाश जी महाराज सत्संग भवन
माहुरी टोला
शेखपुरा - 811105, बिहार

स्वामी बलजीत आनंदधाम आश्रम

राधाकृष्ण मन्दिर, तपोवन सराय, लक्ष्मण झूला, टेहरी गढ़वाल,
ऋषिकेश, उत्तराखंड - 249192, मोबाईल : 9557346475

ananddhamashram09@gmail.com
www.ananddham.net

BAMBASUKI : 9830151002 / 6291183585